P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-9*(Part-1) December 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

नैतिक मूल्य और नारी अस्मिता (हिन्दी कथा साहित्य के सन्दर्भ में)

अनीता मीना
सहायक आचार्य,
हिन्दी विभाग,
रामेश्वरी देवी राजकीय कन्या महाविद्यालय,
भरतपुर, राजस्थान

सारांश

मानव मूल्य जन्मजात होते हैं। उनका स्वरूप प्रकट करना दुर्लभ है, ये शाश्वत होते है, परिस्थितियाँ स्वीकारोक्ति के रूप में प्रकट किए जाते हैं। मानव जीवन से जुड़े विविध स्वरूपों की अभिव्यक्ति नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा कह सकते हैं। इसके दो प्रकार होते हैं– बाह्य एवं आंतरिक। दार्शनिक, सामाजिक, वैयक्तिक, राजनैतिक, पारिवारिक एवं वैज्ञानिक मूल्यों का ह्रास नित नये रूप में हो रहा है, जो कि मानवीय दैनिक जीवन पर बुरा प्रभाव डाले हुए है। हिंदी कथा साहित्य में यौन वृत्तियों, तलाक, दहेज प्रथा, बलात्कार, विवाह पूर्व संबंधों की तीव्रता ने नारी को अपनी गरिमा से नीचे के पायदान पर ला दिया है। स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य में नारी की वैचारिक पृष्ठभूमि को लेकर महिला कथाकारों ने अपनी कथाओं के माध्यम से यथार्थ का वर्णन किया है। आज गिरते नैतिक मूल्यों के कारण समाज में जातिवाद, भाई–भतीजावाद, क्षेत्रवाद एवं विविध समस्याओं ने स्थान ग्रहण कर लिया है।

मुख्य शब्द : नैतिक मूल्य, नारी अस्मिता।

प्रस्तावना

मनुष्य जीवन जीने के लिए कुछ मूल्यों की स्थापना की गई, मूल्यों का विस्तार सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक तथा साहित्यिक स्तर पर इनका सीधा सम्बन्ध मानव जीवन से है। परिस्थितियों के कारण सन्दर्भों की स्वीकारोक्ति व नकारोक्ति में करता है, मूल्य शाश्वत होते है, कभी क्षीण नहीं होते क्योंकि ये दृश्यमान नहीं होते हैं, किसी वस्तु को देख सकते है, किन्तु मूल्यों को देखना असाध्य है। इन्हें चेतना के आधार पर व्यवहृत या अनुभूति हो सकती है। जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए मूल्यो का होना अनिवार्य है, नवीन मान्यताओं परिवर्तित युग–बोध और विज्ञान के प्रभाव के कारण यह कह दिया जाता है, नवीन मूल्यों की स्थापना हो रही है। मूल्य व्यक्ति के व्यक्तित्व में निखार लाने का कार्य करते हैं, क्योंकि मानव मूल्यों के सानिध्य में ही बंधकर जीवन जीता है।

परिभाषाएं

वैसे तो मूल्यों की परिभाषा देना असंभव है, किन्तु कुछ विद्वानों के सुझाव निम्नानुसार है–

डॉ. नगेन्द्र के अनुसार ''मूल्य उस गुण–समवाय का नाम है, जो किसी पदार्थ की अपने लिए प्रमाता के लिए अथवा अपने परिवेश के लिए सार्थकता का निर्धारण करता है। पदार्थ का गुण होने के कारण मूल्य की सत्ता वस्तुपरक है किन्तु प्रमाता सापेक्ष होने के कारण व्यक्तिपरक है।''[1] डॉ. लक्ष्मीकांत वर्मा के अनुसार ''अनुभूति और जीने का अधिकार वांछा को कलाकार किसी भी कर्म–श्रृंखला के माध्यम से व्यक्त करने की चेष्टा करता है तो वही वह मानव मूल्यों की स्थापना करता है।''[2]

मेस्लो के अनुसार ''अवयव स्वयं मूल्यों की वरिष्ठता का निवारण करता है। वैज्ञानिक निरीक्षक उसको उत्पन्न करने की अपेक्षा उसकी सूचना देता है।''[3]

अध्ययन का उद्देश्य

किसी भी लेखन का कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है। नैतिक मूल्य और नारी अस्मिता जैसे शोचनीय विषयों पर गंभीरता से विचार करना और नारी मुक्ति एवं रक्षार्थ उनके बहुआयामी व्यक्तित्व को निखारना प्रमुख उद्देश्य है। वर्तमान जीवन में नारी की बढ़ती अनैतिकता व विचारोन्मुखी सामाजिक परिवेश एवं परिवार में व समाज में होने वाले व्यवहार के प्रति नैतिक मूल्यों एवं उनसे जुड़े संदर्भों को तथाकथित पुरुषवादी सत्ता की चपेट से बचाने के लिए तथा सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक नैतिक मूल्यों की स्थापना करना व भावी पीढ़ी को प्रेरित करना।

मूल्य और उनका वर्गीकरण

मूल्यों के सम्बन्ध में वर्गीकरण निम्नानुसार है, आर्थिक मूल्य, शारीरिक मूल्य, चारित्रिक मूल्य, कलात्मक मूल्य, बौद्धिक मूल्य तथा धार्मिक मूल्य आदि है।"[4] बाह्य एवं आंतरिक प्रमुख है। मेरी सम्मति में मूल्यों का कोई वर्गीकरण का आधार नही होता है। जैसे वातावरण में परिवर्तन होता है, वैसे ही मूल्यों पर भी परिवर्तन हो जाता है। क्योंकि वैज्ञानिक और संस्कृति का प्रभाव व रहन–सहन में परिवर्तन होता है।

दार्शनिक मूल्य

सर्वप्रथम नीतिशास्त्र में दार्शनिक मूल्यों की चर्चा की है, क्यों कि इनका सम्बन्ध नैतिकता से है। शुभ–अशुभ की परख है, मूल्यों का सम्बन्ध मनुष्य के अस्तित्व से है। तत्व विज्ञान में मूल्यों की समस्याओं पर विचार किया जाता है। शुभ–अशुभ की परख की जाती है। सुखानुभूति पर सुखवादियों की धारणा रही है। आध्यात्मवादियों ने वस्तुगत आदर्शों के आधार पर मूल्यों की व्याख्या की गई है। मूल्यों के अभाव में जीवन जीवन नहीं है। मानव प्रवृति परिवर्तनशील है। अतः मूल्यों का परिवर्तनशील होना भी आवश्यक है। आज के भौतिकवादी जीवन में तथाकथित आदर्शो से जीवनयापन करना दुर्लभ हो गया है। मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में दार्शनिक मूल्यों का हस्तक्षेप यत्र–तत्र स्पष्ट परिलक्षित है।

वैयक्तिक मूल्य

व्यक्ति का आत्मा के प्रति निष्ठा का भाव है। 'स्व' आत्म भाव के प्रति जागृति प्रतिभा से आती है। अतः सामाजिक बन्धन व्यक्ति के 'स्व' की रक्षा के लिए तथा दायित्वों के निर्वाह के लिए है। अतः सामाजिक बन्धन व्यक्ति के 'स्व' की रक्षा के लिए होते है। क्या होना चाहिए की धारणा व्यक्ति को समाजोन्मुख करती है, क्योंकि व्यक्ति समाज की ईकाई है। वैयक्तिक मूल्य व्यक्ति को व्यक्ति होने का बोध कराते हैं। किसी भी क्रिया का केन्द्र व्यक्ति स्वयं होता है। मनुष्य समाज में रहकर एक–दूसरे के सहयोग से ही अपने समस्त कार्य सिद्धि कर सकता है। वह अपनी इच्छा से बहुत से कार्य कर सकता है। इस प्रकार महिला कथाकारों ने नारी अस्मिता की रक्षार्थ इन सामाजिक नैतिक आदर्शों की व्याख्यात्मक टिप्पणी हिन्दी कथा साहित्य में मैत्रेयी पुष्पा कृष्णा सोबती, मालती शर्मा, प्रभा खेतान आदि प्रमुख लेखिकाओं के साहित्य में नारी मुक्ति की कल्पना की है। सम्पूर्ण सभ्यता जिन मूल्यों पर आधारित थी, वे झूठे पड़ गये है। परिणाम यह है कि एक भयानक विघटन उपस्थित है।"[5]

सांस्कृतिक मानवमूल्य

जैसे कि पहिए के आरे घूमते है उसी प्रकार अनुभवगम्य होने पर मूल्य निरन्तर चलते रहते है। मूल्यों का जन्म आस्था और विश्वास का परिणाम है। आस्था और विश्वास को ही संस्कृति का नाम दिया जाता है, संस्कार जनित संस्कृति होती है। संस्कृति मूल्यों को उपादानवत प्रस्तुत करती है, जिसका आधार प्राप्त कर व्यक्ति मूल्यों का निर्माण करता चलता है। परस्पर मूल्य और संस्कृति का सम्बन्ध है। संस्कृति मनुष्य को प्रभावित करती है, और वह अपनी विचारधारा बनाता है। सांस्कृतिक मूल्य भौगोलिक परिस्थितियों से प्रभावित होते है। परिणामतः मूल्यों का स्थानान्तरण भी होता है। बंगाल मे पुत्री को 'माँ' तथा दक्षिण भारत में लेडी को 'अम्मा', महाराष्ट्र में मामा की बेटी और बेटे का सम्बन्ध हो सकता है। एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में आवागम समाज में आचार व्यवहार एवं लोक जीवन से जुड़ी परम्पराओं व रीतिरिवाजों का सम्बन्ध मूल्यों से जुड़ा है। महिला लेखिकाओं के कथा साहित्य में स्त्री जीवन से जुड़ी परम्पराओं व नैतिक मूल्यों का पर्याप्त वर्णन दृष्टिगोचर है, जिसमें सांस्कृतिक परिवेश का प्रभाव, व्यक्ति के व्यक्तित्व को निखारने में अभूतपूर्व योगदान देता है।

राजनीतिक मूल्य

राजनीति नियामक होती है। परिणामस्वरूप दण्ड आदि की व्यवस्था नीति के अर्न्तगत आ जाती है। दण्ड न्याय के अधीन होता है, परिणामतः राजनीति में नीति के अर्न्तगत मूल्यों का समावेश हो जाता है। स्वतंत्रता व समानता के माध्यम से वैयक्तिक और सामाजिक हितों की रक्षा होती है। राजनीतिक सुदृढ़ता से ही राष्ट्र व राष्ट्रीयता का विकास संभव है। भ्रष्टाचार अनैतिकता राजनीति में पूर्णतया समावेशित हो जाती है। राजनीति का उद्देश्य तो मानव जन की हित साधना में होता है। सैद्धान्तिक दृष्टि से तो राजनीति में विश्व साहित्य व राजनीति में होने वाले उथल–पुथल ने मानव को काफी आहत किया है। समकालीन महिला कथा साहित्य में राजनीतिक जीवन समाज, अर्थ, संस्कृति आदि विचारधाराओं व मूल्यों में पर्याप्त अंतर हो गया है। आदर्श तो लुप्त प्रायः से हो गये है। परिणामस्वरूप अनास्था, अविश्वास, असत्य, हिंसा आदि विरोधी अवमूल्यन प्रतिफलित होकर नारी जीवन में पितृसत्ता द्वारा प्रताड़ित किया जा रहा है। पहले महायुद्ध में हिरोशिमा व नागासाकी की परमाणु बम्ब की घटना से यूरोपिय राजनीतिक अवमूल्यन ही हुआ है। हिटलर का तानाशाही रूप पौलेण्ड का बंटवारा, भारत–पाक विभाजन, आदि ने मानवीय मूल्यों का हनन किया है, जिससे अस्थिरता भय, अनास्था, आतंक भूख, अकाल का जन्म होता है। इसका प्रभाव जनसाधारण पर बनता है, कथा का जन्म भी यही से होता है।

वैज्ञानिक मूल्य

यह तथ्य सर्व विदित है, कि आज का युग विज्ञान का युग है, जिसका समाज के सभी वर्गों पर प्रभाव पड़ रहा है। धर्म, दर्शन, संस्कृति राजनीति शास्त्र सभी को विज्ञान की कसौटी पर कसा जाने लगा। विज्ञान व्यवहार और प्रमाण का दूसरा नाम है। अतः विज्ञान सत्य है, ईश्वर की खोज सत्य की खोज है, विज्ञान आनन्द की खोज है। सामाजिक आवश्यकताओं और परिवर्तनों के अनुरूप वैज्ञानिक उपकरण बनते है, तदानुसार ही मूल्यों में टकराहट होती है। कथा साहित्य में व्यावहारिक उपयोगिता को कसौटी पर तोला जाता है। जिसमें विवेक स्वतः समाहित है, और विवेक में मूल्य समाविष्ट है। वैज्ञानिक बोध ने व्यक्ति जीवन को आमूल परिवर्तित किया है। "जीवन को सम्यक् एवं संयमित ढंग से चलाने के लिए कुछ मापदण्ड रहने चाहिए। उन्ही के आधार पर मूल्यों की बात की जाने लगी और जीवन की आतंरिक

एवं बाह्य आवश्यकताओं पर खुद कसौटियाँ बन गई।"[6] इस प्रकार महिला कथाकारों ने समाज में निर्धारित मापदण्डों के आधार पर जीवनचर्या का पालन किया। पुरुष की अंहकारी प्रवृत्ति ने उसका शारीरिक, मानसिक और आर्थिक रूप से शोषण किया है। समाज में स्त्रीशुचिता की बात करने वाला पुरुष ही उसी शुचिता भंग कर अस्मिता की लड़ाई में परास्त करने को उतारू हो जाता है। आज नारी मुक्ति कि कल्पना कर प्रभूति महिला लेखिकाओं ने स्त्री के दुःख का जिस रूप में पाठक के समक्ष प्रस्तुत किया उसमें सांस्कृतिक, दार्शनिक एवं सामाजिक मूल्यों के रूप मे स्त्रीवादी विचारधारा का समर्थन किया है, तथा पुरुष के समकक्ष बढ़ने की बात की है।

आज कहने को नारी स्वतंत्र है किन्तु 70 वर्षों वाली स्थिति को बढ़–चढ़ कर आगे आने की आवश्यकता तथा समाज में व्याप्त विषमताओं को मिटाकर स्त्री को जीने की नई राह मिले। महादेवी वर्मा, मैत्रेयी पुष्पा कृष्णा अग्निहोत्री, मृदुलागर्ग, मजुंल भगत, नासिरा शर्मा, प्रभा खेतान आदि प्रमुख चर्चित कथाकारों की कथाओं में मूल्यों का विशेष महत्व है। स्त्रीवादी अवधारणा की चर्चा करे तो स्त्री का महत्व नगण्य समझने वाले समाज के ठेकेदारों को यह सोचना चाहिए कि सृष्टि का मूल बिन्दू नारी है, उसके अभाव में समाज की कल्पना असंभव है। मूल्यों की अभिव्यक्ति का मूल आधार मानवजीवन है, आज सभी मानव मूल्यों में नैतिक मूल्यों की टकराहट सुनाई देती है, विशेषकर दाम्पत्य जीवन में। मूल्य मानव और समाज के आदर्श से सम्पृक्त होने के कारण मानव जीवन के मानदण्ड कहलाते है।

नैतिक मूल्यों का विघटन, सामाजिक मूल्य या आर्थिक व राजनीतिक के साथ नैतिक मूल्यों की टकराहट बन जाती है, मर्यादाओं की टक्कर है, आत्मविश्वास, आस्था, आशा और धर्म निरपेक्षता सब बारी–बारी चपेट में आ गए है, क्योंकि सभी बौद्धिक परख अपने–अपने ढंग से की जा रही है, और इस परख को विज्ञान ने जकड़ लिया है। आज के कथा साहित्य मे यौन–वृत्ति की तीव्रता, भोगे हुए जीवन के यथार्थ अनुभव की प्रामाणिकता तथा आर्थिक दबावों और विवशताओं के बीच व्यक्ति इस तरह पिस रहा है कि वैज्ञानिक तकनीकी तथा औद्योगिक प्रगति के जीवन में वस्तुओं की प्राप्ति में उसे कितना संघर्ष करना पड़ रहा है।

वैदिक कालीन सभ्यता वेद–वेदांगों में नारी को पूज्य माना है। स्वातन्त्रयोत्तर कथा साहित्य में नारी की वस्तुस्थिति शोचनीय होती जा रही है। पुरूष सत्ता के मद से पीड़ित नारी अस्मिता की रक्षा दुर्लभ हो रही है सामाजिक सरोकारों बंधन, मर्यादाओं में बंधकर पुरूष की संकुचित मानसिकता का शिकार होती जा रही है। महिला साहित्यकारों ने स्त्री पुरूष भेद को स्पष्ट रूप से कथा साहित्य में प्रस्तुत किया है जब स्त्री आत्मनिर्भर होना चाहती है किन्तु उसे परिवार पालन से आगे बढ़ने की स्वीकृति पुरूष देना ही नहीं चाहता है, जब स्त्री की चेतना विकसित होती है तो व्यवस्थाएं परम्पराएं चरमराती है। महत्वाकांक्षाओं से अस्वीकार होती है। प्रभा खेतान का ''अन्या से अन्याय'' कुछ इसी प्रकार की कृति है। जिसमें सामाजिकता के साथ नैतिक मूल्यों की चर्चा की है।

निष्कर्ष

अंत में निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि नारी पुरुष सत्ता से मुक्त होने का प्रयास कर रही है। आज नैतिक मूल्यों के अंतर्गत पुरुष व स्त्री दोनों ने मर्यादा त्याग कर पाश्चात्य सभ्यता में तिरोहित होने पर भी समाज, मर्यादा, कल्याण, परोपकार की भावना एवं परिवेशगत चुनौतियों का सामना करते हुए प्रतीत होती है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *डॉ. नगेन्द्र : भारतीय सौन्दर्यशास्त्र की परिभाषा पृ. 160*
2. *लक्ष्मीकांत वर्मा वही पृ. 4*
3. *ए.एच. मोस्लो दुबार्डर्स सॉइकिलोजी ऑफ वींग पृ. 163*
4. *संगम लाल पाण्ड्या : नीतिशास्त्र का सर्वेक्षण पृ 300*
5. *धर्मवीर भारती : मानवमूल्य और साहित्य पृ. 134–135*
6. *आधुनिक काव्य में जीवन मूल्य, डॉ. हुकुम चन्द पृ. 2*